रहने की जगह

रामकुमार तिवारी

गांव तेइया, जिला महोबा, प्रांत उ.प्र. में जन्मे रामकुमार तिवारी को लोग कवि रूप में अधिक पहचानते हैं। लेकिन उन्होंने समय समय पर उल्लेखनीय कहानियां लिखी हैं। सन् 2000 में उन्हें प्रतिष्ठित कथा अवार्ड मिला था। 'घर किसी भी दिशा में था' नाम से कहानियों का संग्रह शीघ्र प्रकाश्य।

हवा इतनी ठंडी और तेज थी कि विपरीत दिशा में चलना सुख की तरह था। दिनेश की इच्छा पान खाने की हुई। पान की गुमटी के पास बलदेव खड़ा था। दिनेश ने बलदेव को देखते ही कहा – "मुझे जमीन मिल गयी।"

बलदेव की आंखें आश्चर्यमिश्रित औपचारिकता में फैलीं और फिर आगे सुनने के लिए स्थिर हो गयीं। इसी बीच बगल में चाय की गुमटी के पास खड़ा आदमी गिरते गिरते अचम्भे की तरह दिनेश के सामने खड़ा हो गया।

"कहां है? कहां है?" उसने कुछ इस तरह पूछा जैसे वह जमीन पर नहीं हवा में लटका हो।

"बसंत बिहार में है, बाजार बमुश्किल आधा किलोमीटर होगा। मैं बहुत दिनों से जमीन के लिए भटक रहा था।"

दिनेश का कहा सुन कर वह बिना कुछ बोले चुपचाप चला गया। उसकी चाल में एक अव्यक्त दृढ़ता थी। वह नीली बद्धियों वाली हवाई चप्पल पहने था और उसका पाजामा सामान्य से कुछ ऊंचा था। पाजामा कम कपड़े की वजह से कुछ ऊंचा सिला होगा जो पहली ही धुलाई में सिकुड़ कर कुछ और ऊंचा हो गया होगा। धुलने से पाजामा का कद ऊंचा हो गया था लेकिन आदमी की स्थिति कुछ गिर सी गयी थी, जिसे उसकी मनःस्थिति ने संभाल लिया था। वह अस्वाभाविक नहीं लग रहा था। चलते चलते वह अपने पहनावे के दिखने और होने से बहुत दूर निकल गया था। दिनेश ने उस दिशा की सड़क को देखा जिस पर वह ओझल हो गया था।

आज दिनेश को शहर की भीड़ से उकताहट नहीं हो रही थी, उसने चलते चलते पान की पीक छोड़ी जो सरकारी अस्पताल की टूटी दीवार के उस पार तक गयी। उसे अपने फेफड़ों में अधिक हवा का होना अनुभव हुआ। वह लम्बे लम्बे कदम बढ़ाता घर की ओर चल दिया।

घर में बैठक की खिड़की खुली थी और परदा हवा में उड़ रहा था। सामने की दीवार पर कैलेण्डर टंगा था जिसमें एक सुंदर मकान की तस्वीर थी। हवा में कैलेण्डर के साथ साथ मकान भी उड़ रहा था। दिनेश को तस्वीर का मकान किसी शिशु की तरह दिखा, जिसे कोई हवा में उछाल उछाल कर खिला रहा हो।

दिनेश को रात में पेशाब के लिए बाहर जाना पड़ता है। बिस्तर की चादर ठीक करते करते वह सोचने लगा – मकान में अपने बेडरूम से अटैच बाथरूम बनवाऊंगा। पेशाब के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

www.tadbhav.com

कपड़े चेंज करने के लिए वह पाजामा खोजने लगा। जैसे ही उसने पाजामा पहना तो उसे लगा पाजामा कुछ ऊंचा है और वह अजीब सा दिख रहा है। उसने नाड़ा खोल कर पाजामे को नीचे खिसका कर फिर से बांधा और संतुष्ट हो गया।

अगले रोज सड़क के किनारे फुटपाथ पर पेड़ों की पौध बेचने वाला बैठा था। दिनेश को वही चाय की गुमटी वाला आदमी पौधों के पास खड़ा दिखा।

दिनेश ने उसके पास जाकर कहा, "कैसे हो?"

"ठीक हूं।"

"क्या पौधे ले रहे हो?"

"नहीं! देख रहा हूं, लेकर क्या करूंगा... कहां लगाऊंगा?"

"क्यों तुम्हारी जमीन नहीं है?"

"नहीं, मेरी कोई जमीन नहीं है और न ही मेरे पिता की कोई जमीन थी। मुझे आश्चर्य होता है कि बिना जमीन के हम कैसे पैदा हो गये?"

वह एक स्वस्थ नीम के पौधे को हाथों में लिए था जिसमें से एक सुंदर पेड़ का आकार आने वाले समय में फैल रहा था। उसने पौधे को देखते हुए कहा, "यह कितना सुंदर है।"

दिनेश ने उसका मन रखने के लिए कहा, "इसे ले लो, जहां रहते हो वहीं किसी खाली जगह में लगा देना।"

उसने दिनेश की आंखों में देखते हुए कहा, "इससे क्या होगा? क्या यह जिन्दा रहेगा? जिसकी अपनी जमीन नहीं होती वह किसी तरह भी नहीं बचता। बस बचा हुआ सा दिखता है। पेड़ों की अपनी जमीन होनी चाहिए। वे अकाल मौत मर रहे हैं। जहां आज तुम खड़े हो, 12 वर्ष पहले यहां घना जंगल था। शाम के बाद आने में डर लगता था लेकिन यह जमीन उन पेड़ों की नहीं थी सो वे नहीं रहे।"

उसकी बातें सुन कर दिनेश को विश्वास नहीं हुआ। यह सब जो उसने अभी अभी सुना है उसे वही, चाय की गुमटी वाले आदमी ने ही बोला है। वह विस्मय से उसे देखता रह गया और फिर कुछ देर बाद महज बात को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से उसने कहा, "आज न जाने कितने आदमियों के पास रहने के लिए एक कमरे की जगह नहीं है। पेड़ों के लिए जमीन की चिन्ता कौन करेगा?"

"चिन्ता तो करनी पड़ेगी, पेड़ों की अपनी जमीन नहीं होगी तो लोगों को बिना पेड़ों के रहना पड़ेगा और यह आत्महत्या ही होगी।"

दिनेश को उसकी बात समझ में नहीं आयी।

उसने दिनेश की आंखों में देखते हुए फिर कहा, "क्या तुम्हें पता है कि यह पेड़ जिसके नीचे हम खड़े हैं, क्यों जिन्दा है? क्योंकि यह आदमी के आदेश से खड़ा है। जो स्वतंत्र होगा, उसे कभी भी मारा जा सकता है। तुमने गर्मी के दिनों में प्याऊ में पानी पिलाते किसी बूढ़े, बच्चे या स्त्री को देखा होगा। यह पेड़ वैसा ही है इसलिए जिन्दा है। एक दिन तुम देखना यह सड़क चौड़ी होगी और यह पेड़ नहीं रहेगा।"

"सड़क का चौड़ा होना जरूरी है। आये दिन एक्सीडेण्ट होते रहते हैं। अपने ही शहर में औसतन चार पांच आदमी रोज मरते हैं।"

"ठीक है लेकिन इसके लिए पेड़ जिम्मेदार नहीं, लोग अपनी मौत ही मर रहे हैं।"

"जो भी हो, पहले आदमी अपने लिए जो जरूरी है वही करेगा। बाद में दूसरी बातों के बारे में सोचेगा।" दिनेश की बात सुन कर उसने थोड़े आवेश में आकर कहा, "आज तक आदमी अपने लिए ही करता आ रहा है फिर भी उसका मन नहीं भरा। उसने हवा, पानी, अन्न सभी कुछ दूषित कर दिया। यहां तक कि अपना चित्त भी। मुझे उसकी वैज्ञानिक दृष्टि और विकास की अवधारणा कुछ भी

www.tadbhav.com

समझ में नहीं आती। वे इस तरह इकहरी और विखंडित हैं कि समूची सृष्टि को एक अंतहीन असंतुलन की ओर धकेल रही हैं, उसके जुटाये तथ्य मुझे एक डरावने घपले की तरह लगते हैं और उसकी गढ़ी तमाम परिभाषाएं झूठी नजर आती हैं।" कहते कहते वह चुप हो गया।

"अगर इस विकास को जिसे तुम जी रहे हो नकार दोगे तो, तुम्हारे पास क्या बचेगा?"

दिनेश का कहा, सुन कर उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान की छाया आयी जिसे दिखने के पहले ही उसके चेहरे ने सोख लिया। उसने अपने हाथ के पौधे को जमीन पर रख दिया। पौधा रखते ही, एक पल में उसका चेहरा अपनी पुरानी आकृति में लौट आया। उसे देख कर दिनेश की आंखें सहज हो गयीं। उनमें वही पुरानी पहचान लौट आयी जो पहले से दिनेश की आंखों में थी। देखते देखते उसके चेहरे में अजीब उदासी का भाव आया और वह चल पड़ा।

उसकी भावदशा देख कर दिनेश को पक्का विश्वास हो गया कि वह सामान्य नहीं है। उसके ऊपर किसी प्रेत की छाया तो नहीं? हो सकता उसके ऊपर जमीन या पेड़ के प्रेत की छाया हो। यह कैसे हो सकता है? वह मन ही मन बुदबुदाया, 'प्रेत तो केवल आदमी का होता है।'

दिनेश घर लौटा तो पत्नी ने मकान के नक्शे के बारे में पूछा, वह नगर निगम जाना भूल गया था। उसने कहा, "कल पता करूंगा।" सोते समय दिनेश की आंखों में एकाएक उसी आदमी का चेहरा आ गया। एक पल को उसे लगा कि कहीं वह आदमी उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। फिर वह अपनी सोच को उल्टा करके सोचने लगा। कहीं मैं स्वयं ही तो उसके पीछे नहीं पड़ गया हूं। उसके चेहरे से कब दिनेश अपने चेहरे की खोज में बीते हुए जीवन में निकल गया उसे पता नहीं चला।

एक दिन दिनेश के मकान का नक्शा पास हो गया लेकिन उसे खुशी नहीं हुई। बस राहत भर महसूस हुई। वह नगर निगम की औपचारिकताएं पूरी करते करते इतना थक गया था कि नक्शा पास होने की खुशी कब छिन गयी पता नहीं चला।

नक्शा पास होने के बाद दिनेश मकान के लिए ऋण के वास्ते बैंक जाने लगा। बैंक दूसरी दिशा में होने के कारण उसके आने जाने में बदलाव आ गया। उसके अंदर अजीब सी रिक्तता, थकान और ऊब घिरने लगी जिसे वह स्वयं नहीं समझ पा रहा था।

शाम को आसमान में हल्की बदली छायी हुई थी जिसमें सूरज की किरणें डूबने से पहले रंग और प्रकाश के अनगिन खेल, खेल रही थीं। बिजली के तारों पर कुछ चिड़ियां कतार में बैठी थीं और एक नीलकंठ आकाश में अपनी उड़ान के करतब दिखा रहा था। बरामदे की कुर्सी पर बैठा दिनेश कुछ समय के लिए अपने से छिटक कर हो रही शाम में खो गया।

पत्नी की आवाज से दिनेश अपने में लौट गया। पत्नी के हाथों में चाय के दो प्याले थे, एक प्याला चाय दिनेश की ओर बढ़ा कर वह पास ही में पड़ी खाली कुर्सी पर बैठ गयी। चाय का घूंट लेकर पत्नी ने कहा, "मैं मिसेज गुप्ता का नया मकान देखने गयी थी, अच्छा बना है। 'लक्ष्मी बिल्डर्स' ने बनाया है। तुम भी देख लो और अगर पसंद आ जाये तो बात कर लो।"

पत्नी की बात सुन कर दिनेश ने कहा, "ठीक है, गुप्ता जी से बात कर लूंगा।" अंदर किसी चीज के गिरने की आवाज आयी तो पत्नी उठ कर अंदर जाने लगी। जाते जाते गहरी सांस ली और कहा, "कब वह दिन आयेगा जब अपने घर के बरामदे में बैठ कर चाय पियूंगी।"

दूसरे दिन दिनेश गुप्ता जी के यहां से लौट रहा था। एकाएक उसकी नजर बगल वाली गली में चली गयी। गली में वही चाय की गुमटी वाला आदमी दिखा। उसके पीछे कुत्ते लगे थे और वह बदहवास हवा में भाग रहा था। दिनेश सड़क से उतर कर गली की ओर दौड़ा। गली में वह दूर दूर तक नजर नहीं आया। कुछ देर तक वह यूं ही खड़ा रहा फिर चुपचाप लौट आया। लौटते हुए वह सोचने लगा उसे जमीन नहीं मिली है, जमीन मिल जाय तो उसका भटकना थम जायेगा। जमीन के लिए पैसे चाहिए। पास में पैसे हों तो किसी की भी जमीन खरीदी जा सकती है।

www.tadbhav.com

उसने चारों ओर कुछ इस तरह देखा जैसे वह मनुष्य जाति की अर्जित जमीन को किसी विराट दृष्टि से देख रहा हो। उसके देखने में एकाएक पास खड़े आदमी की छींक सुनायी दी, नजर मिलते ही उसने कहा, "माफ करना, मुझे धूल धुएं से एलर्जी है।"

उसकी बात सुन कर दिनेश अपने स्वभाव के विपरीत अकारण सा कुछ तीखे स्वर में बोला, "आप कह रहे हैं सो ठीक है लेकिन आपको ठीक ठीक पता नहीं, मैं बताता हूं, आपको धूल धुएं से नहीं आदमी से एलर्जी है। यह धूल धुआं आदमी का ही है। जैसे कुछ दिनों से मुझे खुद आपनेआप से एलर्जी होती जा रही है। चूंकि मैं भी एक आदमी हूं तो मुझे भी आदमी से ही एलर्जी हुई न। यह बहुत त्रासद स्थिति है। हो सकता है यह कुछ न हो सिवाय एक तरह के मनोरोग के या इसका उपचार एकदम भिन्न हो। अबूझ, हमारी सामर्थ्य से बाहर और हम एक एलिर्जिक जीवन जीने के लिए अभिशप्त हों, यह भी हो सकता है हम इस तरह अभिशप्त हो जायें कि हमें कभी अभिशप्तता ही महसूस न हो और हम उम्र दर उम्र एक ही तरह के सुखों में सुख और एक ही तरह के दुखों में दुख ढूंढते रहें।"

छींकने वाले आदमी की सांस अंदर नहीं जा रही थी। वह सांस लेने के लिए संघर्ष कर रहा था। उसने पैण्ट की जेब से 'इनहेलर' निकाला और तीन चार स्ट्रोक लिए और फिर इस तरह चल दिया जैसे उसका दिनेश से किसी प्रकार का संवाद ही न हुआ हो।

दिनेश भी अपने घर की ओर चल दिया। यह एक तरह से ठीक ही रहा कि छींकने वाला आदमी दूसरी दिशा में गया नहीं तो बहुत दूर तक दिनेश के दिलोदिमाग में अटका रहता। आजकल दिनेश में अजीब परिवर्तन आया है। कभी कभी तो उसे स्वयं की उपस्थिति भी किसी दूसरे जन्म की स्मृति सी अनुभव होती है और कभी बहुत पास का व्यक्ति बहुत दूर से गुजरता हुआ सा दिखता है।

कई दिनों के बाद एक दिन दिनेश की उम्र में उसका मकान कभी देखे गये सपने में से निकल कर सामने आ गया। अजीब बात है, अब जब मकान सामने है तो उसे अपने सपने का मकानविहीन हो जाना एक दुख की तरह घेरने लगा। वह हैरान है, जीवन में कितनी तेजी से बहुत कुछ घट रहा है। उजागर हो रहा है। छीज रहा है।

दिनेश के यहां अपने मकान में रहने का सुख धीरे धीरे शांत होकर सम हो गया। बारिश में बैठक की छत में सीलन उतर कर बूंद बूंद टपकने लगी जिससे दिनेश की छोटी बेटी को एक खेल मिल गया। वह बड़ी उत्सुकता से छत में झिलमिलाती बूंदों को देखती रहती और जैसे ही वे गिरतीं, वो उन्हें लपकने की कोशिश करती। दिनेश का बेटा गीले फर्श पर फिसल कर बार बार गिर जाता। वह जब भी गिरता, दिनेश की बिटिया बूंदों को लपकना छोड़ ताली बजा कर हंसने लगती।

पत्नी जब कहते कहते थक गयी तो एक दिन दिनेश छत ठीक करवाने के लिए किसी कुशल कारीगर की तलाश में बाहर निकला। आसमान में बादल थे, हल्की बूंदाबांदी हो रही थी। जब वह 'काल पहाड़ी' के पास से गुजरा तो उसकी नजर पहाड़ी के शिखर पर गयी। पहाड़ी के ऊपर आधारशिला पर वही चाय की गुमटी वाला आदमी खड़ा था। दिनेश का मन उसे आवाज देने को हुआ लेकिन फिर यह सोच कर रुक गया कि वहां आवाज कहां पहुंचेगी। वह बहुत देर तक खड़ा रहा। उसे उम्मीद थी कि वह नीचे की ओर देखेगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह दूर ही देखता रहा। बारिश तेज हो गयी तो दिनेश वहां से चल दिया। चलते चलते उसने एक बार फिर ऊपर देखा तो बारिश में कुछ दिखायी नहीं दिया।

रात में मुसलाधार बारिश हुई। सुबह अखबार में खबर छपी कि बारिश में काल पहाड़ी की आधारशिला ढह गयी लेकिन कोई जनहानि नहीं हुई। दिनेश खबर पढ़ कर काल पहाड़ी की ओर दौड़ा। अभी भी हल्की बारिश हो रही थी। सड़क पर पहाड़ी का मलबा पड़ा था। न जाने क्यों दिनेश को लग रहा था कि जनहानि हुई है। मलबे में वही आदमी दबा है जो दूर दूर तक देख रहा था। कुछ भ्रम सच्चाई के इतने पास होते हैं कि जीवन में अटक जाते हैं। वह पहाड़ी से नीचे उतरती बस्ती में

www.tadbhav.com

चला गया। इस आस में कि किसी से पूछने पर शायद कुछ पता चले।

बस्ती झोपड़पट्टी की थी जिसकी गलियों में नाले का उल्टा पानी बह रहा था। एक बुजुर्ग अपनी अधबुझी बीड़ी को बार बार सुलगा रहा था, लेकिन वह जल नहीं रही थी। उसकी तलब में इतनी तंगी थी कि उससे कुछ पूछना सम्भव नहीं था। बगल के घर से एक महिला नंगधड़ंग बच्चे को टांगे हुए निकली और उसने बच्चे को पानी की धार में टट्टी करने बैठा दिया। दिनेश को पानी में चलने से घिन आने लगी और वह पानी की धार से तेज चलता हुआ ऊपर सड़क पर आ गया।

दिनेश सड़क पर चला जा रहा था। सड़क के किनारे उसे नीली बद्धी वाली हवाई चप्पल उल्टी पड़ी हुई दिखायी दी। वह रुक गया। उसे लगा यह चप्पल उसी आदमी की है और वह चप्पल पहने पूरा का पूरा जमीन में धंसा है। उसने चप्पल सीधी की तो वह आदमी जमीन से निकल कर एक पल के लिए सामने खड़ा हो गया। दिनेश की तंद्रा टूटी, किसी के हंसने की आवाज थी। उसने झटके से चप्पल को वहीं छोड़ा और तेज चलता हुआ दूर निकल गया। वह न जाने कहां कहां यूं ही चलता रहा। उसे शहर में जगह जगह छूटी हुई चप्पलें मिलीं। वह सकते में आ गया। उसकी आंखें फट सी गयीं। उसने एक आदमी को रोक कर पूछा, "क्या शहर में कोई दंगा फसाद हुआ है?"

उस आदमी को उसके पूछने से आश्चर्य हुआ, उसने कहा – "नहीं, कुछ होता तो अखबार में नहीं आता। तुम किस शहर की बात कर रहे हो?"

"इसी शहर की।"

"कहां के रहने वाले हो?"

दिनेश ने कुछ हकला कर कहा, "यहीं...यहीं... का, बसंत विहार में रहता हूं।"

उस आदमी ने दिनेश को घूर कर देखा और कुछ सोचने लगा, कहीं यह पागल तो नहीं है।

दिनेश कुछ देर तक चौराहे पर खड़ा रहा। लोग तेजी से आ जा रहे थे। इस आमदमरफ्त में एक आदमी ने सड़क इस तरह पार की जैसे पूरी सड़क सूनी हो। एक साथ कई वाहन झटके से रुक गये। भद्दी भद्दी गालियां बकते लोग अपने भिंचे जबड़ों और घूरती आंखों के साथ फिर असंगत तेजी से चल पड़े।

न जाने कब सड़क दिनेश को घर ले आयी। रास्ते में उसे किसी ने नहीं पहचाना। मुंह धोकर जैसे ही उसने 'वॉश बेसिन' के आईने में देखा तो उसे विश्वास नही हुआ... उसमें उसी चाय की गुमटी वाले आदमी का चेहरा पहले से था। वह शिथिल होकर चौकी पर लेट गया। कुछ देर बाद उसने अपने को सांत्वना दी। मेरे आईने में उसका चेहरा कैसे हो सकता है, मुझे भ्रम हुआ होगा। दिनेश के चेहरे पर मुस्कान आयी जो ऊपर फैल कर छत के बराबर हो गयी। छत से पानी की एक बूंद टपकी जिसे उसने बीच में ही लपक लिया। फर्श पर किसी के गिरने की आवाज थी।

www.tadbhav.com